स्त्री

नाम एक, रंग अनेक

Its All About Writing

About Us

An initiative to provide a platform for all the emerging writers for getting recognized, connecting with more peoples and fulfill their dream of becoming a writer. Its All About writing is an independent literary organization committed to a vigorous presence for poetry, quotes, Short tales and Much more in our culture. It exists to discover and celebrate the best writeups and to place it before the largest possible audience. It works to raise writers to a more visible and influential position.

IAAW
ITSALLABOUTWRITING.COM

Acknowledgement

The Completion of this project would not have been possible without the incredible work rate of so many people whose name cannot be mentioned. The efforts of all the writers that came together for this Anthology are deeply appreciated. And a big thanks to Hk, Vidhi & Neha members of 'It's all about writing' team. Perfect and Endless support throughout this project is commendable. Above all, thanks to Almighty God for his endless unequivocal love.

Shubham Sharma & Rajneesh Tiwari

POETRIES & QUOTES

Ankit Shukla

Email :- ankitshukla2791@gmail.com

Instagram:- ankitshukla.01

1.

न जाने ये समाज किस ओर चल पड़ा है,
नारी का सम्मान करने की अपेक्छा उसकी गरिमा को तार-
तार करने मैं लगा है।

न उम्र का लिहाज है और ना रिश्तों की मर्यादा,
बस उस विलासिता को पूर्ण करने का सुख देख रहा है।

कहने को तो हम 21 वीं सदी मैं रह रहे हैं ,
पर शायद हम 19 वीं से भी ज्यादा पिछड़े हैं।
जहाँ शास्त्रों में नारी को एक माँ का स्वरूप दिया गया है,
जहाँ शास्त्रों में बहन को लक्ष्मी का दर्जा दिया गया है,

आज वहीँ कुछ राक्षस उसे लूट रहे हैं,
और हम केवल देख और सुन रहें हैं।

19 वीं सदी में बेटी के पैदा होते ही उसे मार दिया जाता था,
और 21 वीं सदी में बेटी के साथ दुष्कर्म किया जाता है।

क्या इसी को सदी का आगे बढ़ना कहेंगे,
क्यूंकि समय बदला, लोग बदले पर मानसिकता नहीं बदली।

जिस धरती को हम अपनी माँ कहते हैं,
उस धरती माँ की रक्षा के लिए जवान ख़ुशी-ख़ुशी शहीद हो जाते हैं।

उसी धरती पर नारी का सम्मान नहीं किया जाता,
उसे आज भी अपने पैरों के धुल के बराबर समझा जाता है।
जिस भारतवर्ष में राम मंदिर के लिए लड़ा जाता है,
राम-सीता को पूजा जाता है,
वहीँ जब नारी के सम्मान की बात आती है तोह सब मौन हो जाते हैं।

न जाने ये कैसी उलझी दो तरफा मानसिकता है,
की एक तरफ नवरात्री में नौ दिन व्रत रखकर उस आंबे माँ को खुश करते हैं,
और वहीँ दूसरी तरफ उसकी गरिमा का ख्याल नहीं रखते,
उसका सम्मान नहीं करते,
अपना क्रोध, अपनी ताकत और अपना पुरुष प्रधान वर्चस्व स्थापित करते हैं।

आरक्षण की राजनीति के लिए देश फूंख जाता है,
पर नारी के सम्मान के प्रतिष्ठा के लिए दरवाजा भी नहीं खटखटाता है ये समाज।

एक प्रेमी जोड़े के शादी करने पर उसके न्याय के लिए पांच बैठते हैं,
पर जब अपने घर के महिलाओं के सम्मान की बात आती है
तोह कोई सामने नहीं आता।

बहुत आसान है किसी पर लाँछन लगाना,
बहुत आसान है किसी पर आरोप लगाना ,
एक दिन जी के देखो उस नारी की ज़िन्दगी,
शायद अपने ग़म कम पड़ जायेंगे रोने के लिए।

बदलाव कहीं से आता नहीं लाना पढता है,
नारी के आस्तित्व का सम्मान करिये,
उनकी गरिमा को बनाये रखिये,
उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी समझिये,

अपनी सोच बदलिए,
अपनी मानसिकता बदलिए,
क्यूंकि सोच बदलेगी तभी तो देश बदलेगा,
तभी तो हम गर्व से कहेंगे,
की हाँ भारत बदल है,
की ये भारत अब सवर्णिम भारत हो चला है।

Ashutosh Das

Email:- ash.das.10101998@gmail.com

Instagram:- ash.10_ & _thedreambook_

1.

"मैं नारी हुं"

मै क्या हुँ मैं कौन हुं

क्या मैं घर की दोष हुं
या मैं पापा की बोझ हुं
क्या मैं किसी का श्राप हुं
या मैं किसी का पाप हुं।

मैं क्या हुँ मैं कौन हुं

मैं तो घर की दिवाल हुं
पापा के सर का ताज हुं
मैं तो इस दुनिया की पालन हार हुं
मैं तो मेरे भाई की ताक़त हुं।

हां मैं एक नारी हुं ।

मैं ही तुमारी माता हुं
मैं ही तुमारी बहना हुं
मुसीबतों के समय बचाने वाली अच्छी दोस्त हुं
मैं ही तुमारी जीवन भर वाली साथी हुं।

हां मै एक नारी हुं ।

ना तो मैं कमजोर हुं
ना ही मैं अबला नारी हुं
ना तो मैं तेरी मैल हुं
ना ही में तेरी रखैल हुं

मैं कौन हुं मैं क्या हुं
मैं तो आग की अंगार हुं
मैं ही तो मां दुर्गा की अवतार हुं
मैं तो राज़ हुं तेरी
मैं तो तेरी ग्रेनी हुं

हां मैं एक नारी हुं।